श्याम शिक्षा महाविद्यालय दमाऊधारा ऋषभतीर्थ (सक्ती)

Shyam Shiksha Mahavidyalaya

बी.एड. प्रथम वर्ष 2015.16

तीसरा पेपर

विषय – शिक्षा के दृष्टिकोण

प्रकरण – शिक्षाशास्त्री – गिजू भाई

प्रस्तुतकर्ता

छात्राध्यापिका/छात्राध्यापक :-

eatqyrk lkgq] enuyky

lkseukFk lkgq]ys[kiky

tk;loky

मार्गदर्शक :–

lgk;d izk/;kfidk

Jherh cj[kk flag

दिनांक: 27-11-2015

रूपरेखा

- प्रस्तावना
- जीवन परिचय
- गिजू भाई का दार्शनिक विचार
- शैक्षिक चिन्तन
- शिक्षा का उद्देश्य
- पाठ्यक्रम
- अनुशासन
- बाल देवो भवः
- बल जगत
- विद्यालय
- अभिभावक
- निष्कर्ष
- संदर्भित ग्रंथ सूची

fxt Hkkb

प्रस्तावना:—

गिजू भाई ने अपने विचारों को न केवल विद्या मंदिरों के माध्यम से मूर्त रूप दिया । बल्कि पुस्तकों के माध्यम से शिक्षकों व अभिभावकों तथा जनमानस तक पहुंचाया भी था । आज उनके इन विचारों का अनेक भाषा में अनुवाद हो चुका है जिस प्रकार गांधी जी ने भारतीयों को अंग्रेजो की दासता से मुक्ति दिलाने में अकथनीय योगदान दिया था । उसी प्रकार बालकों के इस गांधी ने बच्चों को विद्यालय के भयपूर्ण वातावरण से मुक्ति दिलाई । बच्चों के प्रति उनके इसी समर्पण भाव के कारण उन्हे ''मुछो वाली माँ'' की संज्ञा से भी अभिहित किया जाता है ।

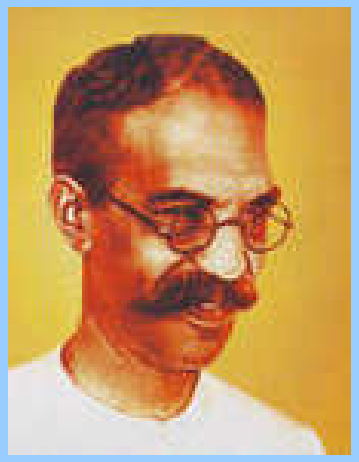

जीवन परिचय

बालकों के गांधी कहें जाने वाले श्री गिजु भाई का जन्म 15 नवम्बर सन् 1885 को गुजरात के चितल गांव में हुआ था । उनका पूरा नाम गिरिजा शंकर भगवान जी बधेका था । इनके पिताजी का नाम श्री भगवान जी बघेका था एवं माता का नाम श्रीमति काशीबा देवी था । गिजू भाई की माता धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी । जिसका प्रभाव गिजू भाई के जीवन पर पड़ा । इसी बीच 12 वर्ष की आयु में इनकी शादी कर दी गई। 1920 ई. में उन्होने दक्षिणमूर्ति विद्यार्थी भवन में ढाई से 6 वर्ष के बालकों की शिक्षा के लिए बाल मंदिर की स्थापना की । मृत्यु – 22 जून 1939 में 54 वर्ष की अवस्था में इस महान शिक्षाशास्त्री का देहांत हो गया । इन्होने गुजराती मं 200 से अधिक बाल पुस्तिकों की रचना की ।

गिजू भाई के दार्शनिक विचार

गिजू भाई ने विद्यालय को मंदिर माना अर्थात बाल मंदिर जिसमें बच्चे रहते है, इसी दृष्टि से उन्होने अपने बाल मंदिर का वातावरण मंदिर जैसा बनाने का प्रयास किया और छात्रों को इस मंदिर का देवता मानते थे और स्वयं को उस देवता का पुजारी मानते थे । वे कहां करते थे कि बच्चों को देवता मानों ''बाल देवो भवः '' उनको प्रिय होती थी ।

गिजू भाई के शैक्षिक चिंतन

गिजू भाई की शैक्षिक चिंतन शिशु शिक्षा तक ही सीमित है । इस क्षेत्र में डॉ. माटेश्वरी मारिया से विशेष रूप से प्रभावित थे, कुछ अर्थो में यह फोवेल की किन्डर गार्डन प्रणाली को भी उच्च मानते थे । उनकी दो रचनाएं विशेष महत्व की थी । एक–दिवा स्वप्न और दूसरा – प्राथमिक शाला में भाषा शिक्षण । गिजू भाई मनुष्य के सर्वांगीण विकास के पक्षधर थे । उनके शब्दों में वास्तविक शिक्षा वहीं जो मानव का सर्वांगीण विकास करें ।

1. शिक्षा का समप्रत्यय । 2. शिक्षा के उद्देश्य

3. पाठ्यक्रम । 4. शिक्षण विधि ।

शिक्षण विधि

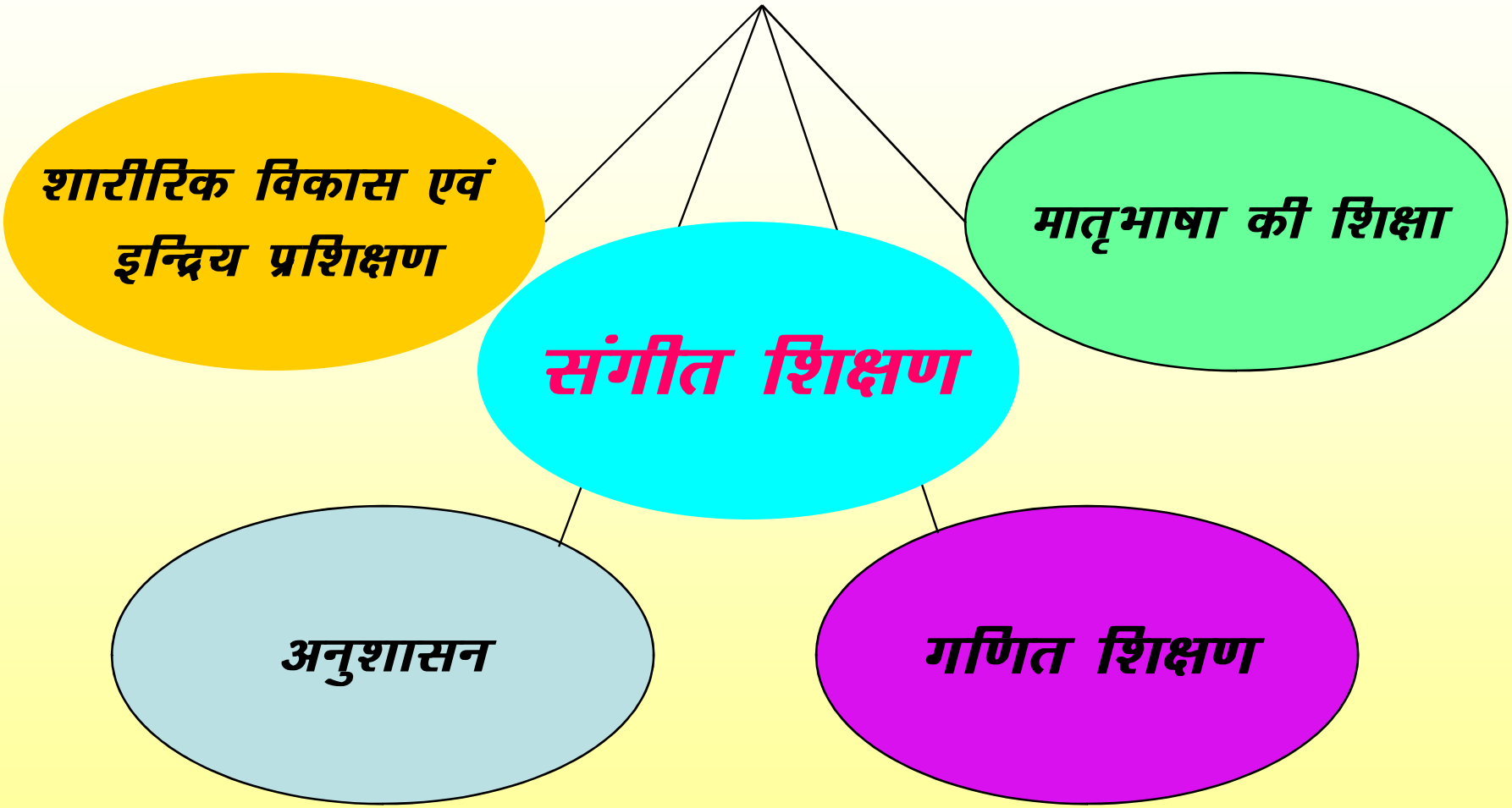

बाल देवो भव:

गिजू भाई अगस्त 1920 से जून 1936 तक छोटे–छोटे बालकों के साथ रहकर तन मन से उनकी सेवा करते रहे । उन्होने बाल विद्यालय को एक मंदिर माना तथा बालकों को उस मंदिर का देवता, बच्चों को देवता मानो, ''बाल देवो भवः'' यह उनका नारा था । स्वयं को उन्होने बच्चों के मंदिर के देवता का पुजारी बताया और एक सच्चे भक्त की तरह बालकों के उपासना करते रहे ।

बाल जगत

गिजू भाई को बाल जगत का पारखी माना जाता है वे बच्चों की दुनिया से पूर्ण परिचित थे । उन्होने बाल अध्ययन, बाल क्षमता, बालमन, कल्पनाशीलता आदि विषयों पर अपना गहन विचार प्रस्तुत किए ।

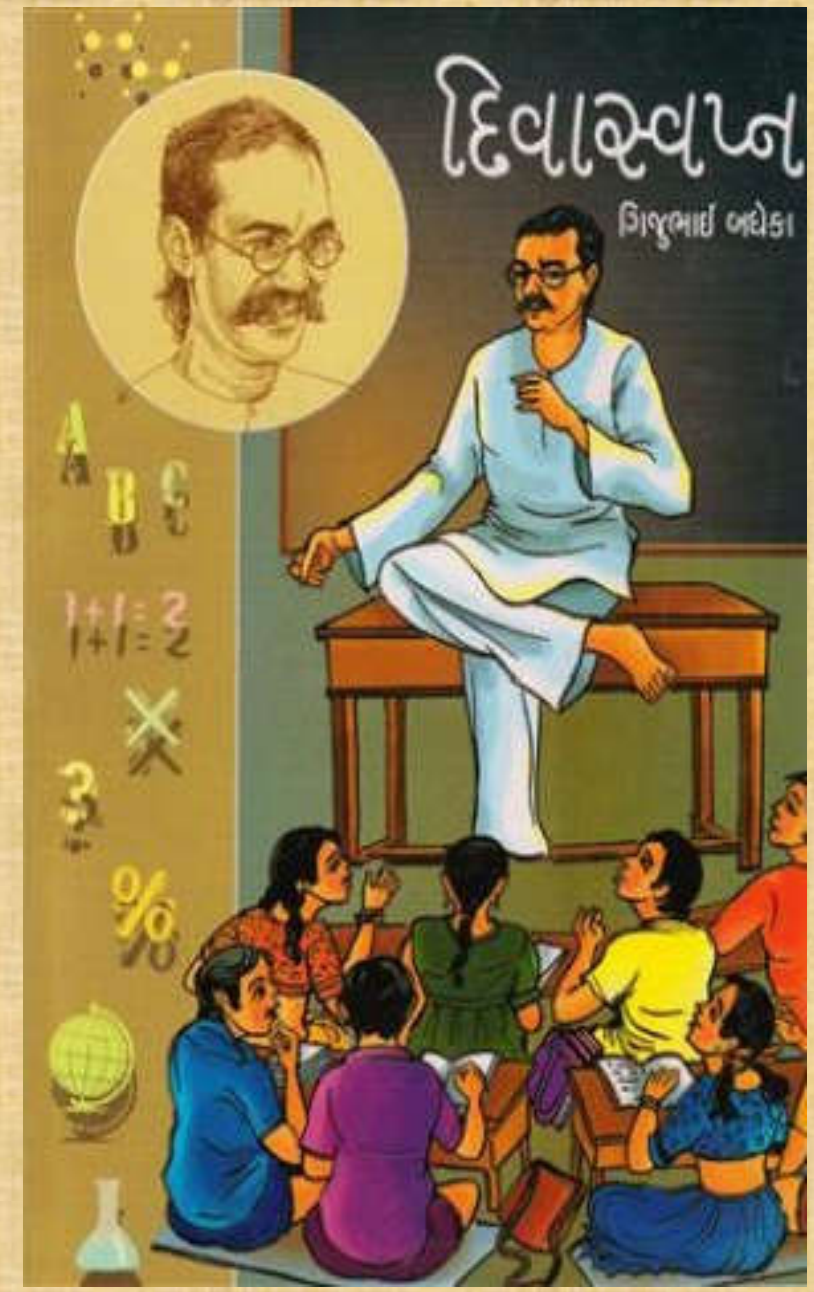

विद्यालय

गिजू भाई ने उन्हे बाल मंदिर की संज्ञा दी जहां विद्यालय रूपी मंदिर में बाल रूपी भगवान की सेवा शिक्षक रूपी पुजारी करें । वे कहां करते थे कि विद्यालय को मंदिर की तरह समझों, सवारों आकर्षण का केन्द्र बनाओं । विद्यालय में बच्चों की सेवा करों उन्हे प्रेम करों, उन्हे अपने विकास के स्वतंत्र अवसर दो । विद्यालय का वातावरण भयमुक्त बनाओ जिससे बालक हंसते हुए विद्यालय में प्रवेश करें ।

अभिभावक

गिजू भाई बच्चों अभिभावकों को शिक्षा का एक प्रमुख घटक माना इसी दृष्टि से बालक के विकास में शिक्षा एवं अभिभावक दो प्रमुख घटक है जब तक ये दोनो मिलकर बच्चों के विकास के लिए प्रयत्न नहीं करेंगे तब तक बच्चों का पूरी तरह विकास नहीं हो सकता है । इन्होने अभिभावकों से पहली अपेक्षा यह की की स्वंय नैतिक मूल्यों का पालन करें । वे अपने बच्चों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करें ।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि गिजू भाई एक समर्पित शिक्षक थे । इन्होने अपना वकालत का पेशा छोड़कर तपस्यापूर्ण शिक्षक के पेशे को स्वीकार किया और बाल सेवा के रूप में जुट गये । एक शैक्षिक चिंतक के रूप में उन्होने बाल शिक्षा संबंधित साहित्य का अध्ययन किया, माण्टेश्वरी एवं हीन्टर गार्डन प्रणालियों को भारतीय प्रदेश में प्रयोग करके देखा गया और शिशु शिक्षा संबंधी अनेक तथ्यों की इन्होने खोज की इन्होने अपने शैक्षणिक शिक्षा जगत से संबंधित व्यक्तियों एवं बालको अभिभावकों तक पहुंचाने का प्रयास किया । उनका सबसे बड़ा कार्य बच्चों को स्कूल के भय पूर्ण वातावरण से मुक्त कराना था ।

संदर्भ ग्रन्थ

उदीयमान भारतीय समाज एवं
शैक्षिक चिन्तन : डॉ. संत कुमार मिश्र

महान शिक्षा शास्त्री : राहुल गुप्ता

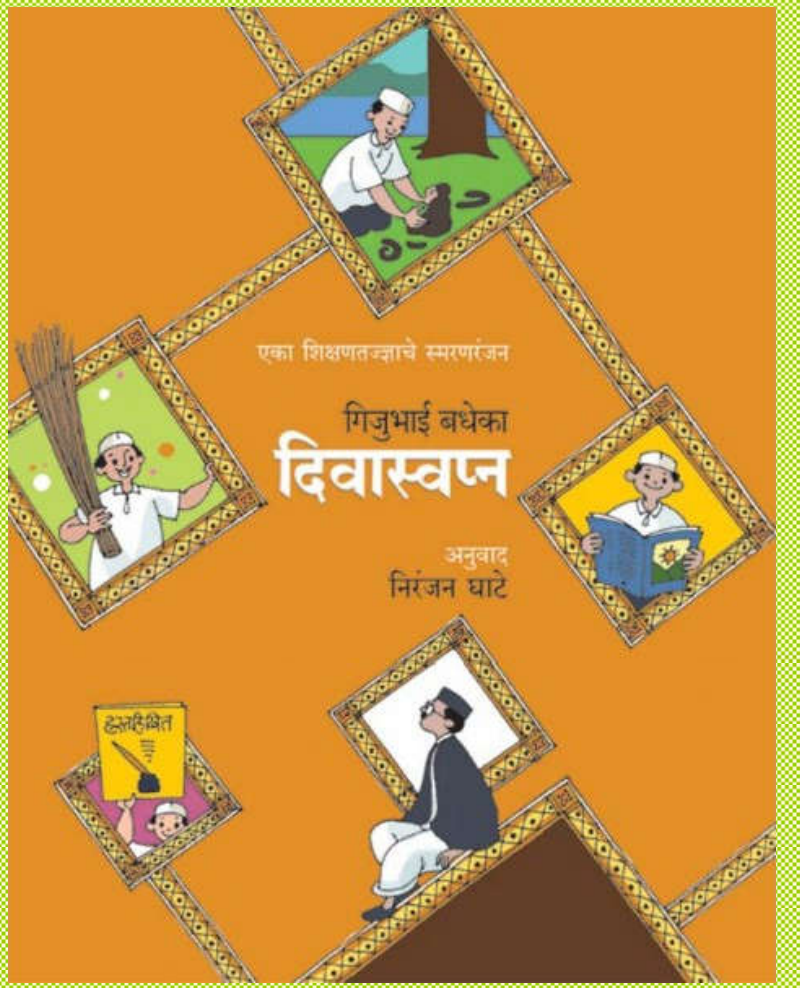
एका शिक्षणतज्ज्ञाचे स्मरणरंजन
गिजुभाई बधेका
दिवास्वप्न
अनुवाद
निरंजन घाटे

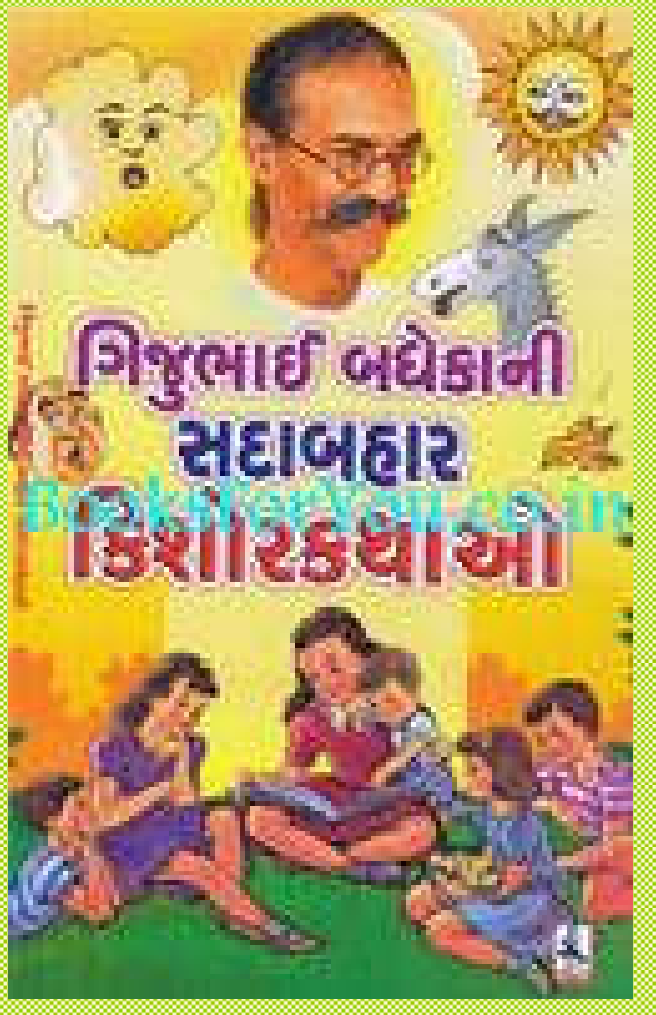
ગિજુભાઈ બધેકાની
સદાબહાર
કિશોરકથાઓ

धन्यवाद...!